मधुमक्खियों का विभिन्न ऋतुओं में प्रबन्धन

मौनपालन की सफलता इसके प्रबन्धन पर निर्भर करती है। थोड़ी सी लापरवाही से कालोनियां एकदम कमजोर हो जाती हैं व उन्हे फिर उसी स्तर पर लाने के लिए कई महीने की महेनत चाहिए। हरियाणा में मौनपालन के कई सीजन (ऋतुएं) हैं जिनमें अलग-2 प्रबन्धन क्रियाएं हैं। यहां इन ऋतुओं में अपनाए जाने वाली प्रबन्धन क्रियाओं का वर्णन किया गया है।

क. सितम्बर से अक्तूबर मास की प्रबन्धन क्रियाएं:

हरियाणा में मौनपालन सीज़न सितम्बर में प्रारम्भ होता है। अभावकाल के पश्चात् कालोनियां कमजोर होती हैं। तब एक खुले दिन जब हवा शांत हो सारी कालोनियों की विस्तृत जांच निम्न चार बातों के लिए करे-

1. मकरंद व पराग की उपलब्धता प्रत्येक कालोनी में जाचे इस समय एक प्रेरक खुराक (30 शर्करा : 70 पानी) देने से रानी नए अण्डे देने शुरू कर देती है जिससे अधिक मात्रा में वर्कर मधुमक्खियां फूलों से पराग व मकरंद एकत्र करने के लिए उपलब्ध होती हैं।

2. कालोनी में रानी की उपस्थिति व गुणवत्ता दोनों की जांच अति महत्वपूर्ण है। पुरानी रानी अण्डे देना कम या बंद कर देती है व जब तक नई रानी अण्डे देना शुरू नहीं करती तब तक कालोनी कमजोर होती जाती है। अतः यह आवश्यक है कि मौनपालक अपनी हर कालोनी की रानी की स्थिति से अवगत हो।

3. जिस कालोनी में ब्रूड (लारवा व प्यूपा) की मात्रा अधिक होगी वह कालोनी अधिक शक्तिशाली होगी, अधिक शहद इकट्ठा करेगी व शत्रु कीटों एवं बीमारियों से लड़ने में समर्थ होगी।

4. कालोनी में शत्रु कीटों व बीमारियों की स्थिति नोट करें, खासतौर पर मोमी पतंगे तथा वरोआ माइट की। यदि इनकी संख्या अधिक है तो रोकथाम के उपयुक्त उपाय करें।

सितम्बर माह में मध्य हरियाणा, विशेष तौर पर रोहतक, सोनीपत, झज्जर व रेवाड़ी में अरहर फसल पर फूल उपलब्ध होता है साथ में बाजरा भी खिला होता है। मौनपालक अपनी कालोनियां इन फसलों पर स्थानांतरण कर सकता है। दूसरा विकल्प कपास पर सिरसा, फतेहबाद, हिसार, जींद, नरवाना, आदि जिलों में है जहां साथ में बाजरा भी उपलब्ध होता है। परन्तु अधिक किटनाशकों के छिड़काव से मौनपालक को सदैव सावधान रहना चाहिए।

इस समय कालोनियों का मनोबल काफी कम होता है। कालोनी की जांच के पश्चात् व मोनालय की स्थिति से परिचित होने के पश्चात् अपनी कालोनियों को आगामी सीजन के लिए तैयार करने के लिए निम्न सुझाव लाभदायक होंगे:-

- कालोनियों की अच्छी तरह सफाई करना।
- कमजोर कालोनियों को मिलाकर एक शक्तिशाली कालोनी बनाना क्योंकि एक शक्तिशाली कालोनी दो कमजोर कालोनियां से अच्छी होती है।
- सभी कालानयां एक समान शक्तिशाली बनाए ताकि एपियरी मे सभी क्रियाए एक समय पर की जा सके सारे औजारों, उपकरणों व बक्सों की मुरम्मत कर लें।
- सर्वेक्षण कर अरहर या कपास पर माइग्रेशन स्थल का चुनाव करें।
- अपने सारे सामान की सूचि बना लें। जिस भी सामान की आवश्यकता या कमी हो (खाना, दवाई, पीपे, मोम की शीट, सुपर आदि) उसे खरीद लें।
- कालोनियों की भली-भांति पैकिंग कर उनका ट्रक आदि से रात में ही माइग्रेशन करें।
- अगले दिन कालोनियों को खोल कर देखें कि कहीं कोई नुकसान तो नहीं हुआ है।

इस सीज़न में मधुमक्खियां फूलों से नैक्टर व पोलन लाने में व्यस्त होंगी व कालोनी बढ़ेगी। मौनपालक कालोनी में समय-समय पर पहले से खाली पड़े छत्तों को दे। इनके अभाव में मोमी छत्ताधार शीट भी दी जा सकती हैं। अपना ध्यान कालोनी बढ़ाने में लगाएं न कि शहद उत्पादन पर। शक्तिशाली कालोनियों पर सुपर चढ़ाएं। अरहर व कपास से एक बार शहद निकाला जाता है। केवल सुपर से ही शहद निकालें वह भी जब 80 प्रतिशत से अधिक मधु कोष्ठ (सैल) सील हो गए हों। कालोनी से कभी भी सारा शहद न निकालें क्योंकि अक्तूबर अंत में अरहर, बाजरा व कपास पर फूल समाप्त हो जाते हैं। कालोनी में इतना शहद अवश्य छोड दें कि 15

नवम्बर तक मधुमक्खियों के खाने का काम चल जाए। यद्यपि इस सीजन में भी नई रानी बनाई जा सकती है परन्तु यह काम सरसों के मुख्य सीजन पर छोड़ दें।

ख. नवम्बर से फरवरी माह का प्रबन्धन:

नवम्बर में तापमान में कमी आ जाती है व मौनपालक के लिए सबसे लम्बे व अच्छे सीज़न की शुरुआत हो जाती है। नवम्बर व मध्य दिसम्बर तक जब मौसम थोडा गर्म रहता है "सफ़ेदा" की अगेती फसल पर फुल आते हैं। इस पर स्थानातंरण करने से एक बार शहद मिल जाता है। अधिक ठण्ड पड़ने पर मध्य दिसम्बर में ही सफेदा के फूल खिलने बंद हो जाते हैं।

मध्य नवम्बर में नूह (पलवल), अलीगढ़ व मथुरा जिलों में अगेती सरसों पर फूल आना शुरु हो जाता है जो अतं दिसम्बर या जनवरी क पा्रम्भ तक चलता है । तत्पश्चात रवडी, महन्दग्रढ, भिवानी, गुरुग्राम, हिसार, अलवर, भरतपुर, कोटा आदि जिलों में सरसों का मुख्य सीज़न दिसम्बर अन्त से मध्य फरवरी तक चलता है। सरसों पर सबसे लम्बे समय तक फूल रहता है व प्रचुरता में नैक्टर व पोलन मिलता है। यह काल कालोनी बढ़ाने व शहद उत्पादन के लिए सर्वोत्तम है व मौनपालक के लिए सबसे व्यस्त समय है। मौनपालक इस काल में निम्न कार्य करेः

1. स्थानांतरण हेतु सर्वेक्षण: एपियरी स्थानांतरण हेतु सर्वेक्षण कर उचित स्थल का चयन धपू में कर। कॉलोनी का मुह दक्षिण-पूर्व की आरे करं ताकि उगते सूर्य की किरणें पड़ने से कालोनी का तापमान बढ़ जाए व मधुमक्खियां जल्दी कार्य शुरु कर दें।

2. कालोनी पर सुपर चढ़ाना: पोलन व नैक्टर की प्रचुरता के चलते रानी मौन अधिक अण्डे देती है जिससे कमेरी मधुमक्खियों (वर्कर) की संख्या बढ़ जाती है व कालोनियां शक्तिशाली होने लगती हैं। ऐसे में कालोनियों में मोमी छत्ताधार फ्रेम पर लगाकर देने से मधुमक्खियां उन पर अपना छत्ता बनाना प्रारम्भ कर देती हैं जिस में ब्रूड, शहद व पोलन इकट्ठा किया जाता है। इस सीजन में मधुमक्खियां लगभग 3 दिन में इस छत्ताधार पर छत्ता बना देती हैं। अतः लगातार निरीक्षण करते हुए जरूरत वाली कालोनियों में छत्ताधार देकर उनकी शक्ति बढ़ाना मौनपालक का मुख्य कार्य है। जब कालोनी 10 फ्रेम पर आ जाए तो ब्रूड चैम्बर के ऊपर एक खाली सुपर चढ़ा दें जिसमें ब्रूड चैम्बर से 1-2 शहद या एक सील्ड ब्रूड का फ्रेम निकाल कर रखें व साथ में 1-2 मोमी शीट भी रखें। दोनों चैम्बर के बीच रानी रोक पट जाली अवश्य लगाएं ताकि रानी ऊपर जाकर अण्डे न दे। सुपर में भी इसी प्रकार आवश्यकता पड़ने पर शीट लगा कर उसकी शक्ति निंरतर बढ़ाएं। अतः मौनपालक सुपर अवश्य चढ़ाएं क्योंकि सुपर वाली कालोनी सदैव ज्यादा व गुणवत्ता वाला शहद देती है। साथ ही सुपर से अधिक संख्या में कालोनी विभाजन कर मौनपालक मौनवशों की संख्या व मुनाफा भी बढ़ा सकता है।

3. शहद निकालना: जब सुपर फ्रेम के 80 प्रतिशत से अधिक मधु सैल सील हो जाएं तो यह शहद निकालने के लिए तैयार है। विदेशों में कालोनियों से एक बार ही शहद निकालते हैं, जबकि हमारे मौनपालक शहद सीजन में कई बार शहद निकालते हैं, वह भी ब्रूड चैम्बर से जो सर्वथा गलत है। ब्रूड चैम्बर से कभी भी शहद नहीं निकालना चाहिए। इससे न केवल कम मात्रा व गुणवत्ता वाला शहद मिलता है बल्कि ब्रूड भी नष्ट हो जाता है।

4. नई व जवान रानियों का उत्पादन: यह सीज़न नई रानी बनाने के लिए सर्वोत्तम है क्योंकि इस समय बड़ी संख्या में ड्रोन पदैा हाते हैं । मौनपालक पुरानी रानियों कि जगह नहीं रानियां पैदा करें। नई रानियां अधिक अण्डे देती हैं।

5. कालोनी विभाजनः सरसों के सीजन में कालोनियां प्राकृतिक विभाजन के भाव में होती हैं अतः इस समय इनका विभाजन किया जा सकता है। विभाजन के लिए 15 जनवरी से फरवरी-मार्च का समय अति उत्तम है क्योंकि इस समय प्रचुरता में ड्रोन (नर) पैदा होते हैं। नई कालोनी का तभी सफल विभाजन माना जाएगा जब उसमें मौजूद नई अगर्भित रानी 10-12 ड्रोन से संभोग कर अण्डे देना शुरू कर दे। कालोनी विभाजन के लिए कुछ कालोनियां जो अधिक शहद उत्पादन करती हैं, शक्तिशाली व रोग रहित हैं, का चुनाव करना चाहिए ताकि उनसे उत्पन्न संतान अच्छी गुणवत्ता की हो। इन कालोनियों को रानी रहित करें। वर्कर इसमें कई रानी सैल बना देंगे। सैल सील होने के 8 दिन पश्चात् रानी निकलती है। अतः सात दिन बाद इन कोष्ठों को सावधानी से तेज चाकू से काट कर नई विभाजित कालोनियों में दें। नए विभाजन बनाने के लिए शक्तिशाली कालोनियों से 1-2 फ्रेम निकल कर नए बक्से में रखें। नए विभाजन में 7-8 फ्रेम होने चाहिएं व इन्हे रानी सैल देने से एक दिन पहले बनाना चाहिए। रानी सैल ब्रूड फ्रेम के मध्य दें। सैल

देने के 17-18 दिन बाद नई रानी अण्डा देना शुरू कर देगी। मौनपालक आमतौर पर नए विभाजन बना कर उन्हें ऐसे ही छोड़ देते हैं। वर्कर इनमें अपने आप ऐमरजेन्सी रानी सैल बना कर रानी पैदा करते हैं। ऐसी विभाजित कालोनी लगभग एक महीना रानी रहित रहती है जिस कारण उसका विकास नहीं होता और न ही अधिक शहद उत्पादन होता है। अतः ऐसी विधि कदापि न अपनाएं। मौनपालक योजना बनाकर अधिक कालोनी विभाजन कर सकता है। अधिक संख्या में सुपर लगाकर जनवरी अन्त व फरवरी में अधिक संख्या में सफल विभाजन लें। कभी भी कमजोर कालोनी (एक ब्रूड चैम्बर वाली) से विभाजन न करें। हर वर्ष कालोनियां की रानी बदलें क्योंकि नई व जवान रानी वाली कालोनियां सदैव शक्तिशाली रहती हैं व अधिक उत्पादन देती हैं।

ग. मार्च से अप्रैल माह का प्रबन्धन:

इन महीनों में तापमान बढ़ जाता है व कालोनियां सफेदा, कीकर, शीशम, फलों (आडू, नाशपती आदि) फसल पर स्थानांतरित कर दी जाती हैं। इन महीनों में निम्न प्रबंधन क्रियाएं करें:-

- गर्मी होने के कारण कालोनियों को छाया में रखें व स्वच्छ पानी का समुचित प्रावधान करें।
- कालोनियों की सघन जांच करें व तलपट्टे आदि की सफाई करें।
- विभाजित कालोनियों की जांच कर सुनिश्चित करें कि उनमें नई रानी ने अण्डे देने प्रारम्भ कर दिए हैं।
- यदि रानी मर गई है या कालोनी द्वारा स्वीकार नहीं की गई है तो उस कालोनी को नया रानी सैल दें।
- यदि किसी कारणवश कुछ कालोनियां फिर भी रानी स्वीकार नहीं करती तो उन्हें किसी शक्तिशाली कालोनी से मिला दें।
- मार्च से मध्य अप्रैल तक उपरोक्त फसलों व कई खतपवारों से भरपूर मकरंद व पराग आता है इसलिए कालोनी में नए छत्ते या नए मोमी छत्ताधार शीट देते रहें।
- कालोनी को शक्तिशाली बनाए रहें व सुपर लगाते रहें। शहद होने पर उसे निकाल लें।
- अप्रैल व मई में कालोनियों को सूरजमुखी व बरसीम पर भी स्थानांतरित किया जा सकता है। इन फसलों से भी खूब पराग व मकरंद आता है, कालोनियां बढ़ती हैं व इनसे भरपूर शहद मिलता है।
- यह सीज़न भी कालोनी विभाजन के लिए उपयुक्त है परन्तु बाद में गर्मी अधिक हो जाती है।
- इस समय कई बार कालोनियों में रौबिंग या लूटमार की समस्या भी देखी जाती है अतः निरीक्षण के समय बक्से अधिक समय तक नहीं खोलने चाहिए।

घ. ग्रीष्मकालीन (मई-जून प्रबन्धन):

गर्मियों में कालोनियां छाया में रखनी चाहिएं जहां स्वच्छ पानी का स्त्रोत हो क्योंकि इस मौसम में मधुमक्खियों को कालोनी का तापमान नियन्त्रण करने के लिए काफी पानी की आवश्यकता होती है। मई व मध्य जून तक सूरजमुखी व बरसीम से प्रचुर मात्रा में मकरंद व पराग मिलता है व शहद भी निकलता है। ध्यान रहे कि आखिरी शहद न निकालें उसे कालोनी में ही छोड़ दें ताकि आगे आने वाले मौसम में जब मौनचरों का अभाव होगा तो कालोनियां अपना गुजारा कर सकें।

ड़. वर्षाकालीन (जुलाई-अगस्त-सितम्बर प्रबन्धन):

इस मौसम में मौन पुष्पों की कमी, अधिक तापमान और नमी, शत्रुओं तथा बीमारियों का प्रकोप मधुमक्खियों की समस्याएं होती हैं। वर्षा ऋतु में वातावरण में बढ़ी हुई नमी के कारण उमस बढ़ जाती है। जिस प्रकार इंसानों को वर्षा में पसीने से शरीर पर चिपचिपाहट और बेचैनी होती है वही स्थिति माध्वियों के लिए भी बनती है। इससे शिशुओं की बढ़वार के बजाय जो संतान है, उसकी सुरक्षा में उसी प्रकार समय लगने लगता है जैसे गर्मी में गर्मी से बचाने के लिए उन्हें लगाना पड़ता है। यह काल मधुमक्खीपालक के लिए सबसे मुश्किल है व बहुत संभाल मांगता है जो नीचे दी गई हैं-

- मौन वंशों को छायादार परन्त खुले स्थान पर रख जहा हवा न रुकती हा आरै फलस्वरूप नमी न बढ़ती हो।
- माध्वीबक्सों में वायु संचरण बढ़ाने के लिए तलपट और शिशु खंड के बीच और शिशु खंड एवं इनर कवर के बीच लगभग 2-3 मि.मी. (या आधा सूत) के बराबर कागज/लकड़ी/माचिस के डिब्बों के टुकड़ों के पैड बनाकर लगा दें।
- तलपट आगे की ओर ढलवां रहे ताकि उस पर पड़ने वाली पानी की बूंदें बह कर निकल जाएं व तलपट जल्दी सूख सके।

- रानी रहित व कमजोर वंशों को नई रानी वाले वंशों के साथ मिला दें।
- कालोनियों का लगभग 15 दिन बाद निरीक्षण करें, अच्छी तरह सफाई करें व खाली छत्तों को बहार निकालें। कालोनी में कभी भी आवश्यकता से अधिक छत्ते न रखें क्योंकि उन पर मोमी पतंगे का आक्रमण हो जाता है जो छत्तों को बिल्कुल खराब कर देता है।
- खाली छत्तों का सही भंडारण करें। इन्हें खाली कमरे, खाली सुपर पेटियों या प्लास्टिक के बड़े थैलों में संभालकर रखा जा सकता है। ध्यान रहे कि ये छत्ते पूरी तरह सूखे हों। इन भंडारित छत्तों की रक्षा के लिए एल्युमीनियम फोस्फाइड गोलियों का प्रयोग कर सकते हैं।
- यह अभावकाल ह अतः मधुमक्खियों को जीवित रखने के लिए कृत्रिम खुराक देनी चाहिए। इन्हे आवश्यकतानसुार चीनी का घोल (50% चीनी + 50% पानी) दें। घोल फ्रेम फीडर में या फ्रेम में डालकर दें। दूसरी सरल विधि है पौलिथिन के लिफाफों में फीड को छत्तों के टॉप बार के ऊपर देना। फीड सदैव शाम को दें व कभी भी गिरने न दें। अन्यथा दूसरी कालोनी से मधुमक्खियां आकार लूटमार करने लगेंगी जिससे पूरी कालोनी मर भी सकती है। कभी भी फीड खुले में न दें।
- इस काल में पराग की उपलब्धता भी काफी कम हो जाती है। इसलिए कृत्रिम पोलन फीड देनी चाहिए।
- हरियाणा की शिवालिक पहाड़ियों में उगने वाला खैर का पौधा वर्षा काल में नैक्टर का अच्छा स्त्रोत है।
- इन जगहों पर कालोनी स्थानांतर कर इस अभाव काल में भी शहद उत्पादन किया जा सकता है।
- इन क्रियाओं व सावधानियों को बरतने से न केवल कालोनियां भली प्रकार रखी जा सकती हैं बल्कि उनसे अधिक उत्पादन भी लिया जा सकता है।